सिविल सोसाइटी पर सवाल

विभूति नारायण राय

आजमगढ़ जिले के मूल निवासी श्री विभूति नारायण राय जी पूर्व आईपीएस अधिकारी और एक प्रख्यात साहित्यकार हैं। वे उत्तर प्रदेश के डीजीपी के अलावा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति पद की शोभा भी बढ़ा चुकी हैं उनकी लिखी तमाम साहित्यिक रचनाएँ और लेख पाठकों के बीच लोकप्रिय हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने हाल मे राष्ट्रीय पुलिस अकादमी के आईपीएस प्रशिक्षुओं के सामने बोलते समय नागरिक समाज को लेकर जिस चिंता का इजहार किया है वह एक खास तरह की मानसिकता की अभिव्यक्ति है। यह मानसिकता मानती है कि देश मे एक मुख्य नैरेटिव होता है और उस से भिन्न सोचने वाले देश तोड़ने वाले और कई बार जाने अनजाने शत्रु के लिये काम करने वाले होते हैं। अजीत डोभाल ने उस नागरिक समाज से नये नवेले पुलिस अधिकारियों को सतर्क रहने की सलाह दी है जो आम तौर से तथाकथित मुख्यधारा के नैरेटिव से भिन्न खड़े दिखते हैं।

जब सोवियत रूस खंड खंड होकर टूटा , एक मोटे अनुमान के अनुसार उसके पास दुनिया के सबसे अधिक परमाणु बम थे। सभी धरे रह गये और उसके गणतंत्र एक एक कर रूस से अलग होते गये। इसके बाद ही एक शब्द दुनिया भर के सैन्य इतिहासकारों मे बहुत लोकप्रिय हो गया - हाइब्रिड वार या संकर युद्ध। माना गया कि अगर मनोवैज्ञानिक दबावों से किसी के राष्ट्र के औचित्य को ही संदिग्ध बना दिया जाय और वहाँ की जनता का एक बड़ा तबका प्रभावी नैरेटिव को चुनौती देने लगे तो फिर शक्तिशाली सेना भी उस राष्ट्र राज्य को बचा नही सकेगी। यह प्रभावी नैरेटिव आम तौर से बहुसंख्यक वाद की उपज होता है और जो इसे चुनौती दे रहे होते हैं वे अमूमन अल्पसंख्यक विमर्श की निर्मिति होते हैं। हाइब्रिड वार का हव्वा खड़ा करने वाले मानते हैं कि देश के शत्रु खुली लड़ाई लड़ने की जगह नागरिक समाज का इस्तेमाल कर उन जड़ों पर ही आघात करने की कोशिश करेंगे जिनसे राष्ट्र को स्थायित्व और समृद्धि मिलती है। नागरिक अधिकारों , जन स्वास्थ्य या पर्यावरण जैसे मुद्दे तो सिर्फ बहाने हैं और उनके पीछे छिपा एजेंडा तो कुछ और ही है।

1960 के बाद का दशक पूरे विश्व मे लोकतंत्र की स्थापना का समय कहा जा सकता है। यह वह समय था जब एशिया और अफ्रीका के गुलाम राष्ट्र औपनिवेशिक गुलामी से धड़ाधड़ आजाद होते जा

रहे थे और कुछ एक अपवादों को छोड़ दें तो सभी आजाद मुल्क लोकतंत्र से अपने अपने तरीके का साक्षात्कार कर रहे थे। कई जगहों पर नये कायम लोकतंत्र देर तक नही टिक सके और जल्द ही फौजी तानाशाहियों ने उनकी जगह ले ली। यह शीतयुद्ध का भी समय था और अमेरिका तथा सोवियत रूस दोनों के प्रभाव क्षेत्र से बाहरगुट निरपेक्ष देशों का एक समूह भी था जो काफी हद तक तक मध्यसे बायें खड़ा दिखता था। इन नव स्वतंत्र राष्ट्रों मे प्रतिरोध की एक नयी संस्कृति विकसित हुई जो कई मायनों मे विदेशी शासकों के खिलाफ चली आजादी की लड़ाई से भिन्न थी। कोई प्रत्यक्ष विदेशी शत्रु न होने के कारण ,अमूमन शांतिपूर्ण ढंग से अपनी ही जनता के नागरिक अधिकारों की बहाली के लिये देशी शासकों के खिलाफ आंदोलित होने वाली इस संस्कृति ने हर जगह एकविशाल और विशिष्ट नागरिक समाज विकसित किया। भारत भी इस प्रक्रिया से अछूता नही रहा। यह नागरिक समाज एक तरफ बहुसंख्यकवाद से संचालित राज्य की ज्यादतियों परभिन्न अर्थों मे अल्पसंख्यकों के जख़्मों पर मरहम लगाता चलता है, दूसरी तरफ इससे भी अधिक उसकी भूमिका प्रेशर कुकर से बीच बीच मे भाप निकालने की भी होती है। इस दूसरी भूमिका के चलते ही प्रौढ़ लोकतंत्र उन पर नियंत्रण न लगाकर उन के लिये काफी कुछ जगह छोड़ते चलते हैं।कई बार सत्ता प्रतिष्ठानों को गलतफहमी हो जाती है कि न सुनना उनकी शान के खिलाफ है और यहीं से ऐसा संघर्ष शुरू होता है जिससे बचना दोनो के हित मे है।

अजीत डोभाल ने उस नागरिक समाज से नये नवेले पुलिस अधिकारियों को सतर्क रहने की सलाह दी है जो आम तौर से तथाकथित मुख्यधारा के नैरेटिव से भिन्न खड़े दिखते हैं। जब सोवियत रूस खंड खंड होकर टूटा, एक मोटे अनुमान के अनुसार उसके पास दुनिया के सबसे अधिक परमाणु बम थे।

ज्यादातर नव स्वतंत्र राज्यों मे एक राष्ट्र बनने की प्रक्रिया भी चली और इस के लिये इन राष्ट्र राज्यों ने अपने अपने नैरेटिव गढ़े। भारत मे भी एक मुख्यधारा की कल्पना की गयी और इस अवधारणा को गढ़ने वाले भूल गये कि वैविध्य से भरे इस विशाल भूभाग की खूबसूरती तो उसकी विविधता का सम्मान करते हुये उसे बचाने मे ही निहित है। यहाँ भाषा, खानपान, वेशभूषा सभी मे भिन्नतायें थीं, गरज यह कि सबसे बड़े धार्मिक समुदाय हिंदुओं के विवाह जैसे रीति रिवाज भी भिन्न थे और मुख्यधारा वाले इन भिन्नताओं को नष्ट कर एक ऐसी स्थिति की कल्पना कर रहे थे जिनमे भारत राष्ट्र मे सब एक ही भाषा बोलते, एक जैसे परिधान मे दिखते या सबकी थालियों से वह सब गायब हो जाता जिसको 'मुख्यधारा' अखाद्य समझती है। इस ज़िद ने कई बार राष्ट्र बनने की प्रक्रिया को बाधित किया और यह नागरिक समाज ही था जिसने मुख्यधारा की प्रक्रिया को चुनौती दी और देश को टूटने से बचाया। आज विविधताओं के लिये पहले से अधिक सम्मान या स्वीकृति दिखती है तो इसका श्रेय मुख्य रूप से नागरिक समाज के प्रयासों को ही मिलना चाहिये।

नागरिक समाज तपते सूरज के नीचे किसी नखलिस्तान की तरह होता है जिस पर चलते हुये आपको कुछ देर शीतलता की अनुभूति हो सकती है। कैसा भी राज्य हो उसे वक्तन बेवक्तन ऐसे कदम उठाने ही पड़ते हैं जिन के चलते नागरिकों को अपना दम घुटता सा लगता है और ऐसे समय समाज का यह हिस्सा जो पारंपरिक सोच से थोड़ा हट कर खड़ा होता है उस के लिये किसी प्राणवायु सरीखा काम करता दिखता है। ऐसे मे ताजी हवा के इस झोंके को भी बंद करने के इस प्रयास का हमे समर्थन नही करना चाहिये।

पुलिस अकादमी से प्रशिक्षण समाप्त कर निकलने वाले प्रशिक्षुओं का मन कच्चे घड़े की तरह होता है। उस पर कुछ भी उकेरा जा सकता है। खासतौर से अगर सलाह अजीत डोभाल जैसी उनकी अपनी सेवा के 'सफलतम' अधिकारी के मुख से निकल रही हो तो उनमे से अधिकांश के लिये यह किसी वेदवाक्य से कम नही होगा। सौ के लगभग ये अधिकारी अगले पाँच छः वर्षों के भीतर देश के अलग अलग हिस्सों मे पुलिस का मध्य नेतृत्व संभाल रहे होंगे और अगर तब उन्हे यह वक्तव्य याद आया कि राज्य के प्रभावी नैरेटिव के विपक्ष मे खड़े दिखते नागरिक समाज के लोग देश की सुरक्षा के लिये खतरा होते हैं तो हम कल्पना कर सकते हैं कि उनका आचरण कैसा होगा। उन्हे यह समझना मुश्किल होगा कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिये बड़े बांधो या आणविक संयंत्रों का विरोध करने वाले देश के शत्रु नही है, उन्हें यह विश्वास दिलाने मे भी आपको काफी प्रयास करना पड़ेगा कि घरेलू हिंसा के खिलाफ बातें करने वाले लोग भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के किसी वृहत्तर अंतरराष्ट्रीय एजेंडे के अंग नही हैं।